ISSN 2395-051X

स्वतंत्रयोत्तर काल में संगीत और रोजगार

डॉ. हरिओम सोनी

सहायक प्राध्यापक, विभागाध्यक्ष, संगीत विभाग

शासकीय स्वशासी कन्या स्नातकोत्तर उत्कृष्टता महाविद्यालय सागर (म.प्र.)

सारांश -

भारतीय शास्त्रीय संगीत का स्वरूप भिन्न कालों में भिन्नता लिये दिखाई देता है। प्रत्येक काल के संगीतकारों ने संगीत के प्रायोगिक पक्ष पर सूक्ष्मता से कार्य करते हुये राग-ताल के नये आयाम जोड़े साथ-साथ संगीत के अनेक ग्रंथों की रचना हुई जिससे हमारे संगीत का विकास हुआ एवं संगीत संरक्षित हुआ। आधुनिक काल में संगीत के दो मनीषियों पं. विष्णु नारायण भातखंडे एवं पं विष्णु दिगम्बर पलुस्कर ने अपना संपूर्ण जीवन संगीत के लिये समर्पित किया साथ ही साथ संगीत शिक्षा के क्षेत्र में रोजगार हेतु प्रयास किये, स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् सरकारी एवं गैर सरकारी क्षेत्र में संगीत और रोजगार को लेकर वृहद् स्तर पर कार्य किये गये जिसके परिणाम स्वरूप आज संगीत विषय के अन्तर्गत निजी एवं शासकीय क्षेत्र में रोगजार की अपार संभावनाऐं है।

मुख्य शब्दः- संगीत, रोजगार, संगीत घराने, मठ।

भारतीय संगीत का इतिहास वैदिक और पूर्व वैदिक काल से मिलना प्रारंभ हो जाता है, संगीत के इतिहास को प्राचीन काल, मध्य काल एवं आधुनिक काल तीन वर्गो में विभाजित करते हुये इसका अध्ययन किया जाता है। संगीत के इतिहास में रोजगार के दृष्टिकोण से अध्ययन किया जाये तो यह ज्ञात होता है कि संगीत को प्रारंभ से ही संरक्षण की आवश्यता रही है और जिस-जिस काल में संगीत को जितना अधिक संरक्षित किया गया वह उतना ही अधिक फला-फूला एवं संगीत का उतना अधिक विकास हुआ। प्राचीन काल में मंदिरों मठों में संगीतकारों को विशिष्ठ स्थान प्राप्त था जहां ईश्वर उपासना हेतु संगीत का उपयोग होता है जहाँ से संगीतज्ञों का भरण पोषण हुआ करता था, वहीं मध्यकाल में राजतंत्र की स्थापना हुई इस समय संगीतज्ञ राजा महाराजाओं के यहां दरबारी संगीतज्ञों के रूप में नियुक्त रहते थे। राजदरबारों में नियुक्त संगीतकारों को जीवन यापन हेतु केवल अपने अपने संगीत के नवीन सृजन करते हुये अच्छे से अच्छा संगीत राजदरबारों में प्रस्तुत करना होता था और राजा एवं दरबारियों का मनोरंजन करना होता था, नियुक्त दरबारी संगीतज्ञों को अपने परिवार के भरण-पोषण की किसी भी प्रकार की चिंता न होकर अपने संगीत का विकास करना था। जिसका सुखद परिणाम यह हुआ कि संगीतकारों का पूरा ध्यान संगीत पर केन्द्रित होने के कारण संगीत के घरानों का निमार्ण हुआ और संगीत के तीनों विधाओं गायन वादन और नृत्य में घरानों का निर्माण होकर

विशिष्टता लिये हुये ऐसे संगीत का सृजन हुआ दूसरे अन्य संगीत से भिन्न था इस प्रकारों घरानों का निमार्ण हुआ, और संगीतकारों को स्थायी रोजगार भी उपलब्ध रहा।

आधुनिक काल के संगीत पर दृष्टिपात करने पर हम भारतीय संगीत को अठारहवीं शदी के अंतिम चरण से मान सकते हैं साथ ही साथ उन्नीसवीं शताब्दि तक इस संगीत के प्रायोगिक पक्ष के साथ-साथ सैद्धान्तिक पक्ष पर बहुत कार्य किया जा चुका था। संगीत विषय के अनेको ग्रंथों की रचना की जा चुकी थी एवं यह काल संगीत के पुनरूत्थान का काल माना जा सकता है। अत्याधुनिक काल की बात की जाये तो वर्तमानसंगीत के प्रचार प्रसार का श्रेय प्रमुख रूप से संगीत द्वय श्री विष्णु नारायण भातखंडे एवं पं. विष्णु दिगम्बर पलुस्कर को दिया जाता है आप दोनों ने अपना संपूर्ण जीवन संगीत के प्रचार-प्रसार में लगाया और जनसाधारण में शास्त्रीय संगीत की समझ पैदा की। पं. विष्णु दिगम्बर पलुस्कर का जन्म 10 अगस्त 1860 को मुम्बई के बालकेश्वर में हुआ था आाप ने संगीत की लिपि पद्धति को विकसित कर संगीत के सामान्य विद्यार्थियों को समझने योग्य बनाया आपने अनेक संगीत सम्मेलन किये, एवं संगीत के पुराने उस्तादों की प्राचीन बंदिशों को सुन-सुन कर उन्हें लिपी बद्ध कर क्रमिक पुस्तक मालिक के रूप में प्रकाशित करवाया। साथ ही साथ लखनऊ में भातखंडे संगीत महाविद्यालय, ग्वालियर में माधव संगीत महाविद्यालय तथा बड़ौदरा का संगीत विद्याालय आपके ही प्रयासों से स्थापित हुये। श्री विष्णु दिगम्बर पलुस्कर का जन्म सन् 1872 ई. में कुरून्दवाड़ बेलगाव में हुआ आपने भी अपना संपूर्ण जीवन भारतीय संगीत को समर्पित कर इसकी सेवा की आपने अनेकों संगीत विद्यालयों की स्थापना की 5 मई 1901 गांधर्व महाविद्यालय मुम्बई तथा गांधर्व महाविद्यालय मंडल से एक शाखा लाहौर में भी खोली। इस प्रकार स्वतंत्रता प्राप्ति के पूर्व आप दोनों संगीत की विभूतियों ने शिक्षा के क्षेत्र में संगीत को एक विषय के रूप में स्थापित करने का जो कार्य किया वह भविष्य में संगीत में शिक्षा के क्षेत्र में रोजगार के रूप में मील का पत्थर साबित हुआ।

स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् देश में एक नये युग का सूत्रपात हुआ, राजशाह का अंत हुआ और देश में लोकतंत्र की स्थापना हुई जिसके परिणाम स्वरूप देश में सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक प्रत्येक क्षेत्र में सकारात्मक परिवर्तन हुए। इन परिवर्तनों का प्रभाव संगीत के क्षेत्र में होना स्वभाविक था अतः संगीत के क्षेत्र में भी अमूलचूक परिवर्तन हुये। स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् भारत देश की सरकार ने संगीत के विकास में कई महत्वपूर्ण कदम उठाए साथ ही साथ निजी क्षेत्र में व्यक्तियों द्वारा महत्वपूर्ण कार्य किये गए जिससे सरकारी एवं गैर-सरकारी क्षेत्रों में संगीत के क्षेत्र में रोजगार के क्षेत्र विकास हुआ।

15 अगस्त 1947 को देश को स्वतंत्रता की प्राप्ति हुई और राजतंत्र की समाप्ति हुई और देश में लोकतंत्र की स्थापना हुई देश के वह सभी संगीतकार जो राजदरबारों में स्थायी रूप से संगीतकार के रूप में नियुक्त थे यह सभी संगीतकार बेरोजगार हो चुके थे क्योंकि संगीतकार पूर्ण रूप से अपनी संगीत साधना में रत रहते थे और अधिकांश संगीतज्ञ ज्यादा पढे-लिखे नहीं थे और देश-दुनियां की जानकारी भी नहीं रखते थे संगीतकारों की अपनी अलग ही दुनियां थी और वह थी 'संगीत की दुनिया' स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् बेरोजगार

ISSN 2395-051X

हो चुकेसंगीतकारों के लिये इस कठिन समय में आशा की किरण बनकर आया 'आकाशवाणी', स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् देश के संगीतकारों को रोजगार प्रदान करने में सर्वाधिक महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह आकाशवाणी ने किया। स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् यह वह समय था जब रेडियों मनोरंजन का एक महत्वपूर्ण साधन माना जाता था इस समय प्रत्येक व्यक्ति के घर रेडियो भी नहीं हुआ करता था टेलीवीजन की तो कल्पना भी नहीं की जा सकती थी जिस व्यक्ति के घर रेडियो होता था उसे सम्पन्न श्रेणी का परिवार माना जाता था और आकाशवाणी द्वारा प्रसारित कायक्रमों द्वारा व्यक्ति मनोरंज किया करता था। इस समय संगीतकारों द्वारा आकाशवाणी के लिये शास्त्रीय, उपशास्त्रीय, लोक संगीत की रिर्काडिग करने की शुरूआत हुई संगीतकारों के लिये एक सम्मानजनक मानदेय की व्यवस्था की गई साथ ही साथ आकाशवाणी ने स्वर-ताल परीक्षण के उपरांत स्थायी नियुक्ति की व्यवस्था भी गई, आकाशवाणी से सेवानिवृत्त संगीतकारों से साक्षात्कार में यह पाया गया कि संगीतकार आकाशवाणी में नौकरी नहीं करना चाहते थें उन्हें विभिन्न प्रकार से समझाकर आकाशवाणी स्थायी रूप से रखा जाता था इस प्रकार की स्थायी नियुक्ति का आधार केवल संगीत का अच्छा ज्ञान ही काफी था संगीतकारों से किसी भी प्रकार की डिग्री-डिप्लोमा की अपेक्षा नहीं रहती थी केवल आकाशवाणी ग्रेड ही पर्याप्त था ।

स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् उच्च शिक्षा के क्षेत्र में संगीत विषय पर वृहद स्तर पर कार्य किये गये जिसमें '1950 में सर्वप्रथम बनारस हिन्दू वि.वि. में संगीत विभाग खोला गया एवं पं. औंकारनाथ ठाकुर को अध्यक्ष संगीत विभाग नियुक्त किया गया एवं 1955 में खैरागढ़ (म.प्र.) वर्तमान में छत्तीसगढ़ में इंदिरा कला संगीत विश्वविद्यालय की स्थापना की गई जो कि ऐशिया का पहला संगीत विश्वविद्यालय स्थापित हुआ। तत्पश्चात् अनेकों-अनेक संगीत विद्यालयों की स्थापना स्वतंत्र रूप से अथवा प्रशासकीय सहायता से इंदौर, मैहर उज्जैन, आदि स्थानों पर हुई संगीत के अनेक पाठ्यक्रम चलाए गए। सन् 1948 -49 में संगीत शिक्षा समिति का गठन हुआ जिसके अध्यक्ष श्री बी.जी. जत्थार थे जिन्होंने विभिन्न पक्षों पर सुझाव दिये। जैसे-

- शिक्षा प्रणाली में विभिन्न स्तरों पर संगीत का स्थान।
- विद्यालयों में भिन्न-भिन्न स्तर पर संगीत शिक्षण की व्यवस्था।
- सहायक अनुदानों की व्यवस्था।
- विभिन्न विद्यालयों के पाठ्यक्रमों की जानकारी।
- पी.एस.सी. तथा एस.एस.सी. परीक्षाओं का पठ्यक्रम।
- भारतीय संगीत की एकरूपता स्वरलिपि पद्धति का प्रयास और उसका योगदान।''

इस प्रकार स्वतंत्रता प्राप्ति के पूर्व संगीत को एक विषय के रूप में स्थापित करने की शुरूआत पं. भातखंडे जी के द्वारा की गई थी एवं देश स्वतंत्र हो जाने के पश्चात् देश की सरकारों के द्वारा संगीत विषय को उच्च शिक्षा के पाठ्यक्रम में शामिल किया गया। वर्तमान में अन्य विषयों की भाँति संगीत विषय में मास्टर, नेट,

पीएच. डी. की उपाधियां प्रदान की जाती है एवं उच्च शिक्षा के क्षेत्र में रोजगार की उपलब्धता प्रदान करती है। उच्च शिक्षा के साथ-साथ स्कूल शिक्षा के अन्तर्गत '1964-66 में शिक्षा आयोग (कोठारी कमीशन) ने भी संगीत एवं दृश्य कला की शिक्षा पर विशेष बल दिया परिणाम स्वरूप संगीत उच्चतर माध्यमिक एवं स्नातकोत्तर स्तर पर पढ़ाया जाने लगा ।' शासन द्वारा किये गये प्रयासों के परिणाम स्वरूप वर्तमान समय में स्कूली शिक्षा के अन्तर्गत केन्द्रीय विद्यालय एवं नवोदय विद्यालयों में संगीत शिक्षकों की नियुक्तियाँ की जाती हैं, इन विद्यालयों में अन्य विषयों की भाँति बी.एड. की आवश्यक्ता नहीं होती बल्कि स्नातक एवं स्नातकोत्तर की डिग्री के अधार पर ही उच्च वेतनमान के साथ स्थायी नियुक्ति की व्यवस्था होती है।संगीत विषय के अन्तर्गत भारतीय रेल्वें में भी स्थायी रूप से रोजगार की व्यवस्था होती है जिसमें 'संगीत कलाकार' के नाम से पदों पर भर्ती होती है जिसमें स्नातक या स्नातकोत्तर स्तर की डिग्री के साथ-साथ आकाशवाणी का ग्रेड भी अनिवार्य होता है। इसके अलावा पंचायत आफिसों में संगीतकारों की नियुक्तियां होती हैं जिसमें संगीतकारों को स्थानीय गीत या लोक गीतों के माध्यम से शासकीय नीतियों के प्रचार प्रसार का कार्य करना होता है। इस प्रकार से देखा जाये तो हम पाते हैं कि स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् शासकीय तौर पर संगीत में स्थायी रोजगार के वृहद प्रयास किये गये इसी प्रकार से गैर सरकारी क्षेत्र में भी संगीत के नये-नये आयाम खोजे गए जैसे प्राईवेट रेडियो चैनलों पर ऐनाउंसर का काम, प्राइवेट स्कूलों में संगीत शिक्षक का काम, संगीत आर्केट्रा, ड्रम बैंड इत्यादि के द्वारा भी रोजगार के अवसरों की उपलब्धि हुई ।

तथापि यह बात पूर्णतः सत्य है कि संगीत का एक सच्चा साधक संगीत का पुजारी होता है जिस प्रकार एक साधु-सन्यासी पूरे समय ईश्वर की उपासना में तल्लीन रहता है ठीक उसी प्रकार सच्चा संगीतज्ञ संगीत के विचारों में खोया रहता है, उसके द्वारा संगीत के नये-नये रूपों का सृजन चलता ही रहता है। संगीत साधक कला को केवल अपनी आजीविका का साधन नहीं मानता, परन्तु संगीतकार के लिये भी जीवन यापन हेतु साधनों की आवश्यकता होती है, आधुनिक युग में जिस प्रकार का समाज है उसमें जीवन यापन हेतु एवं परिवार की आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु रोजगार की परम आवश्यकता है,जैसा कि पूर्व में बताया जा चुका है कि प्राचीन संगीतकारों को राजदरबारों में स्थायी नियुक्तियां होती थी उनकी सारी जिम्मेदारी राजा स्वयं ले लेता था परन्तु आज के आधुनिक समाज में जीवन निर्वाह हेतु स्थायी रूप से रोजगार की आवश्यकता जरूरी हैं। यदि कला साधक का संगीत उच्च श्रेणी संगीत का सृजन कर रहा है और वह देश के संगीत के विकास में विशेष योगदान है तो सरकार के द्वारा देश के प्रतिष्ठित संगीतकारों के लिये पद्म सम्मानों से लेकर भारत रत्न भी प्रदान किये गये है तथापि ऐसे संगीतकारों के लिये भी स्थायी रोजगार की आवश्कता हमेशा ही रहती है।

यह बात पूर्णतः सत्य है स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् संगीत विषय में सरकारी और गैर सरकारी क्षेत्रों में रोजगार के दृष्टि से सकारात्मक कार्य हुआ है, तथापि अभी भी वृहद् स्तर पर कार्य किये जाने की आवश्यकता है, प्रमुख रूप से शिक्षा के क्षेत्र में देखा जाये तो हम पाते है कि जब विद्यार्थी उच्च शिक्षा में प्रवेश लेता है और संगीत विषय का चयन करता है और उसका संगीत का ज्ञान लगभग शून्य होता है, वह सिनेमा संगीत को की

सबकुछ मानकर चलता है यदि स्कूल स्तर की शिक्षा में संगीत विषय को अनिवार्य कर दिया जाये तो विद्यार्थी का संगीत ज्ञान सतही ना रहकर स्तरीय होगा, युवा संगीतकारों को स्थायी रोजगार की प्राप्ति भी होगी एवं उच्च शिक्षा के अन्तर्गत स्नातक स्तर में प्रवेशित विद्यार्थी जब पहले से संगीत का प्रारंभिक ज्ञान लेकर आयेगें उन्हें संगीत सीखने में आसानी होगी एवं संगीत शिक्षा का स्तर भी बड़ेगा। इन सभी प्रयासों से संगीत का स्तर, शिक्षा के क्षेत्र में संगीत में रोजगार, एवं उच्च शिक्षित शास्त्रीय संगीत के श्रोता भी बढ़ेगें जो कि देश अपने संगीत शास्त्रीय संगीत के लिये निश्चित ही लाभप्रद होगा।

संदर्भ -

1. तोमर डॉ. अवधेश, संगीत शास्त्र सुरसरि, एन.डी. पब्लिकेशन सागर, 2012, पृ.90.
2. वहीं
3. शर्मा, डॉ. महारानी, संगीत मणि, भुवनेश्वरी प्रकाशन, इलाहाबाद, 2008
4. रतोनियां, स्व. पं. रामस्वरूप : आकाशवाणी निर्देशक, भोपाल (विभिन्न अंतरालों पर चर्चा)
5. गोस्वामी, डॉ. बी.ए. : आकाशवाणी निर्देशक, भोपाल (विभिन्न अंतरालों पर चर्चा)